राज्य में मीड–डे मील कार्यक्रम

एक विश्लेषण

देश की सर्वोच्च न्यायालय ने 28 नवम्बर 2001 को अपने ऐतिहासिक फैसले में कहा था कि देश के सभी सरकारी व सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों में पढ़ने आने वाले प्रत्येक बच्चे को प्रतिदिन दोपहर में भोजन दिया जाना चाहीए। जिसमें कम से कम 300 कैलोरी, तथा 8–12 ग्राम प्रोटीन होनी चाहीए। इन स्कूलों में यह भोजन प्रतिदिन 100 ग्राम अनाज के हिसाब वर्ष में कम से कम 200 दिन उपलब्ध करवाना चाहिए। 20 कि.ग्राम अनाज स्कूल आने वाले प्रत्येक बच्चों को मिलना चाहिए।

राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध करवाये गये आकड़ों का विश्लेषण करते हैं तो कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आते हैं जो अपने आप में एक बड़े घोटाले की और संकेत करते हैं जिसमें विद्यालय से लेकर बड़े अधिकारियों की लापरवाही सामने आती हैं।

राज्य सरकार के मिड–डे–मील कमिश्नर कार्यालय से सूचना के अधिकार के तहत प्राप्त किये गये पिछले चार साल के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर कई चौकाने वाले तथ्यों को उजागर किया है जिससे ज्ञात होता है कि इस कार्यक्रम में कितना बडा घोटाला शामिल है।

सरकार द्वारा उपलब्ध करवाये गये आकड़ों के अनुसार वर्ष 2002–03 से लेकर 2004–05 मे 220 दिनों के लिए 22 किलो अनाज प्रत्येक बच्चे के लिए आंवटित किया गया। वर्ष 2005–06 में यह घटकर 192 दिनों के लिए 19.200 किलोग्राम रह गया। उक्त आवंटन के विरूद्ध राज्य में प्रत्येक बच्चे को वर्ष 02–03 में 18.99 किलोग्राम, 03–04 में 17.43 किलोग्राम वर्ष 04–05 में 15.32 किलोग्राम तथा 2005–06 में 11.38 किलोग्राम अनाज वितरीत किया गया।

सारणी – 1

मिड–डे–मील के तहत अनाज का आंवटन, उठाव व वितरण की स्थिति

वर्ष	*कुल नामांकन* (लाखें में)	*अनाज का आंवटन* (क्विटंल में)	*अनाज का उठाव* (क्विटंल में)	*अनाज का वितरण* (क्विटंल में)	व्यय राशि (लाख रुपये में)
2002-03	71.78	1579098.30	1440055.43	1363093.41	6495.43
2003-04	76.78	1689193.66	1364874.40	1338462.09	6058.30
2004-05	76.61	1685681.24	1210270.59	1173964.99	6522.82
2005-06	102.16	1961082.97	1223770.83	1162148.76	17099.14

सारणी दो में गत चार वर्ष के नामांकन तथा प्रति विद्यार्थी अनाज के आवंटन व वितरण को दर्शाया गया है।

सारणी – 2

मिड–डे–मील के तहत प्रति विद्यार्थी अनाज का आंवटन, उठाव व वितरण की स्थिति

वर्ष	*कुल नामांकन (लाखें में)*	*अनाज का आंवटन (किलोग्राम में)*	*अनाज का उठाव (किलोग्राम में)*	*अनाज का वितरण (किलोग्राम में)*	*व्यय राशि (रुपये में)*
2002-03	71.78	22.00	20.06	18.99	90.49
2003-04	76.78	22.00	17.78	17.43	78.91
2004-05	76.61	22.00	15.80	15.32	85.14
2005-06	102.16	19.20	11.98	11.38	167.38

सारणी 2 के अनुसार 2002–03 की तुलना में 2005–06 में नामांकन में लगभग 42 प्रतिशत की वृद्धि हुई इसकी तुलना में प्रति विद्यार्थी अनाज के आवंटन में 13 प्रतिशत की कमी, अनाज के उठाव व वितरण में 40 प्रतिशत की कमी हुई हैं। वही वर्ष 2005–06 राशि बढने का कारण सूप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार सरकारी व सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों में पढ़ने आने वाले प्रत्येक बच्चे को प्रतिदिन

पका हुआ भोजन उपलब्ध करवाने के आदेश की क्रियान्विति के फलस्वरूप प्रति विद्यार्थी प्रतिदिन 2 रूपये की दर से भोजन पकाने, दाल,सब्जी एवं तेल मसालों की खरीद के लिए आंवटित किया गया।

सारणी 2 के अनुसार यदि बच्चों के नामांकन के अनुसार देखे तो सरकार द्वारा 100 ग्राम प्रति विद्यार्थी के हिसाब से 02–03 में 190 दिन, 03–04 में 174 दिन, 04–05 में 153 दिन व 05–06 में 114 दिन ही सभी नामांकित बच्चों को अनाज का वितरण किया गया है इस आधार पर सरकार ने पिछले 4 सालों में एक भी बार 200 दिनों तक बच्चों को भोजन उपलब्ध नहीं करवाया है।

सर्वोच्च न्यायालय के दिशा निर्देशानुसार 100 ग्राम अनाज प्रति बालक 200 दिनों तक के आधार पर यदि **अनाज के वितरण** के अनुसार बच्चों की संख्या का आंकलन करे तो वर्ष 02–03 में 68.16 लाख, 03–04 में 66.92 लाख व 04–05 में 58.70 लाख , 05–06 में 28.11 लाख बच्चों को ही अनाज उपलब्ध करवाया गया है जो कि दर्शाये गये नामांकन से काफी कम है जों इस बात को दर्शाता है कि वास्तविक रूप में बच्चों को नामांकन विद्यालयों में कम है। यदि इसे वास्तविकता मानते है तो करोड़ों रूपये का अनाज जो वितरित होना बताया गया है वो कहां गया ?

विभाग के अधिकारी की बात को सच माने तो उनके अनुसार 80 प्रतिशत बच्चों की उपस्थिति को मानते हुए अनाज का उठाव व वितरण किया जाता है। इस आधार पर विभाग द्वारा उपलब्ध करवाये गये आंकडो के आधार पर वर्ष 2002–03 में 57.4 लाख बच्चों को, 2003–04 में 61.4 लाख, 2004–05 में 61.3 लाख व 2005–06 में 81.7 लाख बच्चों को अनाज/पका हुआ भोजन वितरित किया गया। उक्त बच्चों को 100 ग्राम प्रतिदिन के हिसाब से 200 दिनों तक वर्ष 2002–03 में 11483.5 मै. टन अनाज वितरित किया जो लगभग 21465.9 मै. टन अधिक है। वर्ष 2004–05 में 122579 मै.टन अनाज वितरित किया जाना चाहीए था इसकी तुलना में 17396.5 मै. टन ही अनाज वितरित किया गया वहीं 2005–06 में 163449.1 मै. टन अनाज वितरित किया जाना था जबकि 116214.9 मै. टन ही अनाज वितरित किया गया जो लगभग 47234.2 मै. टन कम है। इस आधार पर लगभग 23.6 लाख बच्चों को पका हुआ भोजन नहीं मिला जो स्कूलों में नामांकित थे।

सरकारी नामांकन के आकड़ों को ड्राप आउट के आधार पर विश्लेषित करें तो 2002–03 से 2004–05 की दर 54 प्रतिशत रही थी। इस आधार पर वर्ष 2002–03 में 38.76 लाख, 03–04 में 41. 46 लाख, 04–05 में 41.37 लाख और 2005–06 में 55.16 लाख बच्चों ने ही मध्याह्न भोजन का लाभ उठाया जो कि नामांकन के अनुसार काफी कम है।

विद्यार्थियों को पका हुआ भोजन उपलब्ध करवाने के लिए राज्य सरकार द्वारा जो धन राशि उपलब्ध करवायी जाती है वो भी आदेश के अनुसार काफी कम है। वर्ष 02–03 में 90.5 रूपये प्रति बच्चा प्रति वर्ष उपलब्ध करवायी गयी जो घट कर 2004–05 में 85 रू. ही रह गयी। 05–06 में केन्द्र सरकार द्वारा अतिरिक्त धन राशि उपलब्ध करवाने के कारण यह राशि बढ़कर 167 रू. प्रति बालक प्रति वर्ष हो गयी। यह भी प्रति बच्चा प्रतिदिन 2 रूपये की दर से 200 दिन के हिसाब काफी कम है।

अनाज का आवंटन

- वर्ष 2002– 2003 से 2004–2005 तक प्रत्येक जिले को 100 ग्राम अनाज प्रति बच्चा प्रतिदिन 220 दिनों के लिये आवंटित किया गया था।
- 2005–06 में यह आवंटन घट कर प्रत्येक जिले को 100 ग्राम अनाज प्रति बच्चा प्रतिदिन 192 दिनों के लिये आवंटित किया गया था।

अनाज का वितरण

वर्ष 2002– 2003 से 2005–06 तक प्रति बच्चा 100 ग्राम प्रति दिन के हिसाब से

- 2002–03 में 18.99 किलो गेहूं प्रति बच्चे की दर से वर्ष भर में वितरित किया।

- 2003–04 में 17.43 किलो गेहूं प्रति बच्चे की दर से वर्ष भर में वितरित किया।
- 2004–05 में 15.32 किलो गेहूं प्रति बच्चे की दर से वर्ष भर में वितरित किया।
- 2005–06 में 11.38 किलो गेहूं प्रति बच्चे की दर से वर्ष भर में वितरित किया।

राज्य में नामांकन की स्थिति

सारणी–1

2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2002-03 की तुलना में प्रतिशत वृद्धि
71.78	76.78	76.61	102.16	42.3%

स्रोत – कमीशनर मीड– डे मील द्वारा उपलब्ध करवायी रिर्पोट के अनुसार

वह जिले जहां आवंटन के विरूद्ध बहुत कम वितरण हुआ–

सारणी–2

प्रति बच्चा प्रति वर्ष

जिले का नाम	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
अजमेर	16.22	17.10	16.48	10.25
बीकानेर	12.55	18.47	12.27	12.46
जयपुर	14.41	18.20	14.58	11.06
जैसलमेर	15.81	16.42	18.73	17.02
कोटा	14.55	17.03	13.65	5.52
सिरोही	15.63	14.40	13.10	5.40
धौलपुर	16.59	19.50	15.23	12.06

वह जिले जहां आवंटन के विरूद्ध बहुत कम वितरण हुआ नामांकन की स्थिति –

सारणी–3

	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2002-03 की तुलना में 2005-06 में प्रतिशत वृद्धि
अजमेर	302027	247546	269645	399987	32%
कोटा	131754	151545	160171	407503	209%
सिरोही	122321	143099	162090	299867	145%

स्रोत – कमीशनर मीड– डे मील द्वारा उपलब्ध करवायी रिर्पोट के अनुसार

नोट– '-' का निशान कमी को तथा + का निशान नामांकन में वृद्धि को दर्शाता है।

उपरोक्त सारणी में जिलों का दर्शाया गया है जहां 2002–2003 में आवंटित अनाज 22 किलो प्रति बच्चा प्रति वर्ष की तुलना में बहुत कम अनाज वितरीत किया गया तथा 2005–06 में उसमें और भी कमी आ गई। कोटा व सिरोही वर्ष 2002–03 में क्रमशः 14.55 किलो व 15.63 किलो अनाज वितरीत किया जो घटकर वर्ष 2005–06 में क्रमशः 5.52 किलो व 5.40 किलो अनाज प्रति बच्चा प्रति वर्ष रह गया। अजमेर में 2002–03 में 16.22 किलो अनाज वितरीत किया गया जो घटकर 2005–06 में 10.25 किलो अनाज प्रति बच्चा प्रति वर्ष रह गया। यदि इन तीनों जिलों में नामांकन की स्थिति को देखे (सारणी 2 में) तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इन तीनों जिलों में नामांकन में कोटा में लगभग तीन

गुणा वृद्धि हुई है सिरोही में लगभग डेढ गुणा वृद्धि हुई है वही अजमेर में नामांकन में 32 प्रतिशत वृद्धि हुई है।

वह जिले जहां वितरण में ज्यादा कमी आई है

सारणी–4

प्रति बच्चा प्रति वर्ष

जिले का नाम	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
अलवर	22.21	16.80	13.50	10.79
बुन्दी	21.51	18.86	17.57	7.20
चित्तौडगढ़	19.69	13.80	12.58	11.09
चुरू	23.54	18.58	15.80	11.86
दौसा	21.66	14.85	17.01	10.35
हनुमानगढ़	20.47	21.60	16.46	9.08
झालावाड	22.08	16.81	16.49	9.68
सवाई माधोपुर	21.23	16.53	15.12	5.96
झुन्झुनू	22.23	14.92	17.16	13.17
पाली	20.37	18.99	17.57	11.66
राजसमन्द	21.41	20.31	15.63	9.99
सीकर	21.81	15.45	16.25	14.59
सिरोही	15.63	14.40	13.10	5.40
टोंक	22.48	19.04	17.82	8.31
उदयपुर	20.40	20.02	17.75	11.02

वह जिले जहां वितरण में कमी आई है नामांकन की स्थिति

सारणी–5

जिले का नाम	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2002-03 की तुलना में प्रतिशत वृद्धि / कमी
अलवर	312642	373156	407641	423021	35%
बुन्दी	123254	132210	127494	289860	135%
चित्तौडगढ	230240	219003	241128	298971	30%
चुरू	211507	233739	236156	319817	51%
दौसा	161291	192604	174183	278180	72%
हनुमानगढ़	143843	149786	158611	270663	88%
झालावाड	143029	188663	186874	290860	103%
सवाई माधोपुर	115483	143366	142235	293520	154%
झुन्झुनू	188152	191860	192596	224695	19%
पाली	325639	262941	255852	345816	6%
राजसमन्द	153013	153873	151535	295470	93%
सवाई माधोपुर	115483	143366	142235	293520	154%
सीकर	289956	311398	279612	270876	-7%
सिरोही	122321	143099	162090	299867	145%
टोंक	133473	125452	148519	340670	155%
उदयपुर	365342	398804	363283	574885	57%

सारणी 4 व 5 में उन जिलो की स्थिति को दर्शाया गया है जहां वर्ष 2002–03 में आवंटित गेहूँ की तुलना में लगभग 90 प्रतिशत गेहूँ वितरीत किया गया था वहां वर्ष 2005–06 में वितरण में 51 से 155 प्रतिशत की कमी आई है। बुन्दी में 2002–03 की तुलना में 2005–06 में अनाज के वितरण में 67 प्रतिशत की कमी आई है जबकि यहां नामांकन में 135 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। सवाईमाधोपुर में अनाज के वितरण में 72 प्रतिशत की कमी आई जबकि यहां का नामांकन में 154 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। झालावाड में अनाज के वितरण में 56 प्रतिशत की कमी हुई है जबकि नामांकन में 103 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसी प्रकार टोंक में 2002–03 की तुलना में 2005–06 में वितरण में 63 प्रतिशत की कमी हुई है जबकि यहां का नामांकन में 155 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

उक्त विश्ललेषण के आधार पर राज्य में सरकारी व सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों में चल रहे *'दोपहर का भोजन कार्यक्रम'* में काफी अनियमिताएं सामने आ रही है जो यह दर्शाती है कि

- सरकार या तो बच्चों के नामांकन को काफी बढ़ा चढ़ाकर बतला रही है।
- या फिर बच्चों को पुरा भोजन उपलब्ध नहीं करवाया जा रहा है।

या फिर ड्रापआउट के आधार पर जो बच्चे वास्तव में स्कूलों में पढ़ रहे है उन पर मिड डे मील के मापदण्ड के अनुपात में काफी अधिक रुपया व्यय कि जा रहा है या अनाज का दुरूपयोग हो रहा है। क्योंकि आज भी विद्यालयों में ड्राप आउट की दर 53 से 55 प्रतिशत के बीच यथावत चल रही हैं।

राज्य के सरकारी विद्यालयों मीड–डे मील कार्यक्रम पर अध्ययन

राज्य के 305 सरकारी विद्यालयों में जहां मीड–डे मील कार्यक्रम चल रहा है एक अध्ययन करवाया गया। इस अध्ययन में राज्य की 22 स्वयंसेवी संस्थाओं व जनसंगठनों ने अपने–अपने कार्य क्षेत्र में इस अध्ययन को किया है।

सारणी – 1
अध्ययन में शामिल स्कूलों का प्रकार

क्रम संख्या	जिले का नाम	स्कूल का प्रकार			
		सरकारी प्राथमिक विद्यालय	सरकारी सहायता प्राप्त निजी विद्यालय	E.G.S.केन्द्र	मदरसा/अन्य
1	सिरोही	18			
2	पाली	3	0	0	2
3	उदयपुर	10	0	0	2
4	अजमेर	25	0	0	0
5	बाड़मेर	62	0	0	3
6	बीकानेर	12	0	0	0
7	जोधपुर	22	0	0	1
8	टोंक	5	0	0	0
9	राजसमन्द	8	0	0	0
10	चितौडगढ़	74	0	1	1
11	झालावाड़	23	0	0	0
12	झुन्झुनूं	20	0	0	0
13	अलवर	11	0	0	0
14	कोटा	2			
	योग	295	0	1	9

- इस अध्ययन में राज्य के 14 जिलों की 33 पंचायत समितियों के 305 विद्यालयों के विश्लेषण को शामिल किया गया है।
- इसमें 295 सरकारी विद्यालय एक इ.जी.एस. केन्द्र 9 मदरसा/ शिक्षाकर्मी स्कूलों का अध्ययन किया गया है।
- सरकारी विद्यालयों में तीन माध्यमिक स्तर के 15 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालय भी है।

सारणी – 2

अध्ययन में शामिल स्कूलों में नामांकन व उपस्थिति

जिले का नाम	स्कूलो की संख्या	बच्चों का नामांकन (रजिस्टर के अनुसार)		सर्वे के समय बच्चों की उपस्थिति		सर्वे के समय बच्चों की प्रतिशत उपस्थिति	
		बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका
सिरोही	18	1238	994	836	558	68%	56%
पाली	5	236	241	113	127	48%	53%
उदयपुर	12	435	412	231	259	53%	63%
अजमेर	25	1368	1490	969	875	71%	59%
बाड़मेर	65	3905	2989	2979	2051	76%	69%
बीकानेर	12	1121	923	727	614	65%	67%
जोधपुर	23	1485	1176	1154	1046	78%	89%
टोंक	5	NA	NA	NA	NA	NA	NA
राजसमन्द	8	500	499	222	279	44%	56%
चितौडगढ़	76	2781	2626	2060	1938	74%	74%
झालावाड़	23	1419	1027	770	612	54%	60%
झुन्झुनूं	20	751	810	549	635	73%	78%
अलवर	11	849	655	461	336	54%	51%
कोटा	2	175	185	120	123	69%	66%
योग	305	16263	14027	11191	9453	69%	67%

- *अध्ययन में 305 विद्यालयों में से 295 विद्यालयों के नामांकन व सर्वे वाले दिन बच्चों की उपस्थिति को शामिल किया है।* इनमें टोंक जिले के पांच, चितोड़गढ के चार व झुन्झुनू जिले के एक विद्यालय के नामांकन व सर्वे वाले दिन बच्चों की उपस्थिति को शामिल नहीं किया गया है।
- अध्ययन में शामिल 295 विद्यालयों में नामांकन तुलना में विद्यालयों में सर्वे वाले दिन बच्चों की उपस्थिति लगभग 68 प्रतिशत थी। इसमें 69 प्रतिशत बालक व 67 प्रतिशत बालिका सर्वे वाले दिन विद्यालय में उपस्थित थे।
- इसमें भी कक्षा एक में 63 प्रतिशत बालक व 64 प्रतिशत बालिका उपस्थिति थे, वहीं कक्षा पांच में 75 प्रतिशत बालक व 73 प्रतिशत बालिका उपस्थित थे।
- पाली में 48 प्रतिशत बालक व 53 प्रतिशत बालिका, राजसमन्द में 44 प्रतिशत बालक, 56 प्रतिशत बालिकाऐं, झालावाड़ में 54 प्रतिशत बालक व 60 प्रतिशत बालिकाऐं तथा अलवर में 54 प्रतिशत बालक व 51 प्रतिशत बालिका सर्वे वाले दिन विद्यालय में उपस्थित थे।
- अलवर जिले की किशनगढ़ पंचायत समिति के मिर्जापुर गांव में नामाकंन 355 बच्चों का है। सर्वेक्षण वाले दिन वहां मात्र 107 बच्चे ही उपस्थित थे अर्थात लगभग 32 प्रतिशत उपस्थिति थी।
- पाली जिले की बाली पंचायत समिति के पीपला गांव में 179 बच्चों का नामांकन है सर्वेक्षण वाले दिन वहां 54 बच्चे ही उपस्थित थे। उपस्थित लगभग 30 प्रतिशत उपस्थिति थीं।

सारणी – 3
अध्ययन में शामिल स्कूलों में कुक व सहायिकाएं

जिले का नाम	स्कूलो की संख्या	विद्यालय में कुक व सहायिका		महिला कुक का प्रतिशत				सहायिका का प्रतिशत			
		कुक	सहायिका	SC	ST	OBC	Gen.	SC	ST	OBC	Gen.
सिरोही	18	17	3	6%	47%	47%	0%	0%	33%	67%	0%
पाली	5	5	0	0%	40%	60%	0%				
उदयपुर	12	7	0	0%	100%	0%	14%				
अजमेर	25	25	4	0%	0%	96%	4%	0%	0%	100%	0%
बाड़मेर	65	65	5	20%	2%	60%	18%	0%	0%	60%	0%
बीकानेर	12	9	2	11%	0%	56%	33%	0%	0%	100%	0%
जोधपुर	23	23	0	13%	0%	61%	26%				
टोंक	5	5	0	0%	0%	100%	0%				
राजसमन्द	8	9	4	0%	11%	67%	22%	0%	0%	75%	25%
चितौडगढ़	76	68	9	4%	57%	31%	7%	0%	44%	56%	11%
झालावाड़	23	21	3	0%	0%	81%	19%	0%	0%	100%	0%
झुन्झुनूं	20	20	0	30%	5%	30%	35%				
अलवर	11	11	1	18%	0%	82%	0%	0%	0%	100%	0%
कोटा	2	2	0	50%	0%	50%	0%				
योग	305	287	31	10%	21%	55%	14%	0%	26%	74%	6%

- अध्ययन में शामिल 305 विद्यालयों में 318 लोगों को विद्यालय मीड–डे मील कार्यक्रम से रोजगार मिल पा रहा है। इसमें 306 महिलाएं व 12 पुरुष है। 12 पुरुष विद्यालयों में सहायक के पद पर कार्य कर रहे है।
- इन विद्यालयों में सहायिका/सहायक के रूप में मात्र 31 लोगों को ही रोजगार मिल रहा है।
- 287 महिला कुक में 10 प्रतिशत अनुसूचित जाति की, 21 प्रतिशत अनुसूचित जन जाति की, 55 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग तथा 14 प्रतिशत सामान्य वर्ग की महिलाएं है।
- झुन्झुनू में 35 प्रतिशत, बीकानेर में 33 प्रतिशत जोधपुर में 26 प्रतिशत व राजसमन्द में 22 प्रतिशत महिलाए सामान्य वर्ग की है।
- टोंक में सभी कुक अन्य पिछड़ा वर्ग की है। अजमेर में 96 प्रतिशत, झालावाड़ में 81 प्रतिशत, अलवर में 82 प्रतिशत व बाडमेर में 60 प्रतिशत कुक अन्य पिछडा वर्ग की है।

सारणी – 4
अध्ययन में शामिल स्कूलों में भोजन उपलब्ध करवाने में निजी संस्थाओं की भागेदारी

जिले का नाम	स्कूलो की संख्या	भोजन अन्य निजी संस्था द्वारा उपलब्ध करवाया जाता है		भोजन निजी संस्था के द्वारा बनाकर उपलब्ध करवाया जाता है। तो भोजन कहां पकाया जाता है	
		हा	नहीं	स्कूल में	अन्य जगह
सिरोही	18	1	17	0	1
पाली	5	0	5		
उदयपुर	12	2	10	0	2
अजमेर	25	0	25	0	0
बाड़मेर	65	1	64	0	1
बीकानेर	12	0	12	0	0
जोधपुर	23	0	23	0	0
टोंक	5	0	5	0	0
राजसमन्द	8	0	8	0	0
चितौडगढ़	76	9	67	0	9
झालावाड़	23	1	22	0	1
झुन्झुनूं	20	0	20	0	0
अलवर	11	0	11	0	0
कोटा	2	0	2	0	
	305	14	291	0	14

- अध्ययन में शामिल 305 विद्यालयों में से 14 विद्यालयों में अन्य संस्थाओं द्वारा मध्याह्न भोजन उपलब्ध करवाया जा रहा है। इनमें 9 जगह गांव की महिला स्वयं सहायता समूहों व महिला समिति द्वारा, 2 जगह निजी ठेके पर, 2 जगह नादी फाउन्डेरशन द्वरा तथा एक जगह गांव की स्वंय सेवी संस्था द्वारा मीड–डे मील उपलब्ध करवाया जा रहा है।

सारणी – 5
अध्ययन में शामिल स्कूलों में आवश्यक सुविधाएं

जिले का नाम	स्कूलो की संख्या	*विद्यालय में सुविधाऐं*						विद्यालयों का प्रतिशत जहां पीने के पानी सुविधा नहीं है	विद्यालयों का प्रतिशत जहां रसोई की सुविधा नहीं है	विद्यालयों का प्रतिशत जहां रसोई में भोजन नही पकाया जाता है
		पीने के पानी		भोजन पकाने की रसोई		रसोई में भोजन पकाया जाता है				
		हा	नहीं	हा	नहीं	हा	नहीं			
सिरोही	18	16	2	8	10	5	3	11%	56%	38%
पाली	5	3	2	1	4	0	1	40%	80%	100%
उदयपुर	12	5	7	1	11	0	1	58%	92%	100%
अजमेर	25	21	4	22	3	16	6	16%	12%	27%
बाड़मेर	65	50	15	39	26	30	9	23%	40%	23%
बीकानेर	12	11	1	8	4	8	0	8%	33%	0%
जोधपुर	23	14	9	15	8	8	7	39%	35%	47%
टोंक	5	4	1	5	0	4	1	20%	0%	20%
राजसमन्द	8	7	1	2	6	1	1	13%	75%	50%
चितौडगढ़	76	68	8	12	64	7	5	11%	84%	42%
झालावाड़	23	17	6	12	11	5	7	26%	48%	58%
झुन्झुनूं	20	15	5	8	12	8	0	25%	60%	0%
अलवर	11	11	0	6	5	5	1	0%	45%	17%
कोटा	2	2	0	2	0	2	0	0%	0%	0%
योग	305	244	61	141	164	99	42	20%	54%	30%

- सर्वेक्षण में शामिल विद्यालयों में से 61 वि़द्यालयों में आज भी पीने के पानी की सुविधा विद्याालय प्रांगण में नहीं है। लगभग 20 प्रतिशत विद्यालय हैं जहां पीने व पानी की सुविधा नहीं हैं।
- उदयपुर में लगभग 58 प्रतिशत विद्यालयों में पीने के पानी की सुविधा नहीं हैं। पाली में 40 प्रतिशत, जोधपुर में 39 प्रतिशत, व बाढमेर में 23 प्रतिशत विद्यालयों में पीने के पानी की सुविधा नहीं हैं।
- 305 विद्यालयों में से 141 विद्यालयों में ही रसोई घर है। अर्थात 54 प्रतिशत विद्यालयों में रसोई घर नहीं है। उदयपुर में 92 प्रतिशत, चितोडगढ़ में 84 प्रतिशत, पाली में 80 प्रतिशत व राजसमन्द में 75 प्रतिशत विद्यालयों में रसोई घर नहीं है।
- जिन 141 विद्यालयों में रसोई घर है उनमें से 99 विद्यालयों में ही रसोई का उपयोग खाना पकाने के लिए किया जा रहा हैं। *लगभग 70 प्रतिशत रसोई घर ही काम में लिये जा रहें है*।
- ***राज्य में मात्र 32 प्रतिशत विद्यालयों में रसोईघर कार्यशील अवस्था में है।***
- झालावाड जिले में जिन विद्यालयों में रसोइघर है उनमें भी 58 प्रतिशत रसोईघरों में भोजन नहीं पकता हैं। यहां भोजन या तो खुले में पकाया जाता है अथवा कमरों के बरामदों में।

सारणी – 6
अध्ययन में शामिल स्कूलों में काम में ली जाने वाली सामग्री की गुणवता

जिले का नाम	स्कूलो की संख्या	भोजन पकाने के लिए काम में ली जाने वाली सामग्री की गुणवता			
		अच्छी	ठीक ठाक	खराब	देखने के लिए उपलब्ध नही
सिरोही	18	15	3	0	0
पाली	5	4	1	0	0
उदयपुर	12	2	3	5	2
अजमेर	25	22	3	0	0
बाड़मेर	65	57	8	0	0
बीकानेर	12	4	8	0	0
जोधपुर	23	22	1	0	0
टोंक	5	3	2	0	0
राजसमन्द	8	7	1	0	0
चितौडगढ़	76	58	16	0	2
झालावाड़	23	10	13	0	0
झुन्झुनूं	20	14	6	0	0
अलवर	11	10	1	0	0
कोटा	2	2	0	0	0
योग	305	230	66	5	4

अध्ययन में शामिल 305 विद्यालयों में से 230 विद्यालयों में भोजन पकाने के लिए काम में ली जाने वाली सामग्री की गुणवता **'अच्छी'** बताई गई वहीं 66 विद्यालयों में सामग्री की गुणवता **'ठीक–ठाक'** बताई गई। 5 विद्यालयों में सामग्री की गुणवता **'खराब'** बताई गई जबकि चार विद्यालयों में भोजन पकाने के लिए काम में ली जाने वाली सामग्री **'देखने के लिए उपलब्ध नही'** थी। इनमें उदयपुर में दो विद्यालयों में नन्दी फाउन्डेशन व बाडमेर में एक विद्यालय में धारा संस्था व चितोडगढ़ में एक विद्यालय में ठेकेदार द्वारा विद्यालय में भोजन उपलब्ध करवाया जा रहा है इसलिये वहा भोजन पकाने के लिए काम में ली जाने वाली सामग्री देखने के लिए उपलब्ध नहीं थी।

सारणी – 7
अध्ययन में शामिल स्कूलों में बच्चों को उपलब्ध करवाये जाना वाला भोजन

जिले का नाम	स्कूलो की संख्या	रोजाना एक ही प्रकार का भोजन उपलब्ध करवाया जाता है	
		हॉ	नहीं
सिरोही	18	1	17
पाली	5	1	4
उदयपुर	12	3	9
अजमेर	25	0	25
बाड़मेर	65	3	62
बीकानेर	12	1	11
जोधपुर	23	0	23
टोंक	5	0	5
राजसमन्द	8	0	8
चितौडगढ़	76	4	72
झालावाड़	23	1	22
झुन्झुनूं	20	0	20
अलवर	11	1	10
कोटा	2	0	2
योग	305	15	290

अध्ययन में शामिल 305 विद्यालयों में से 290 विद्यालयों में **रोजाना अलग–अलग प्रकार का भोजन उपलब्ध करवाया जाता है।** वहीं 15 विद्यालयों में **रोजाना एक ही प्रकार का भोजन उपलब्ध करवाया जाता है।**

झालावाड जिले की डग पंचायत समिति के छामन गांव में पिछले एक माह से बच्चों को कच्चा अनाज वितरित किया जा रहा था।

सारणी – 8
अध्ययन में शामिल स्कूलों में सरकारी विभाग के अधिकारियो द्वारा अवलोकन

जिले का नाम	स्कूलो की संख्या	विगत दो माह में विद्यालय अवलोकन हुआ		
		हां	नहीं	यदि हां तो कितनी बार
सिरोही	18	16	2	50
पाली	5	1	4	1
उदयपुर	12	4	8	6
अजमेर	25	25	0	58
बाड़मेर	65	7	58	25
बीकानेर	12	9	3	22
जोधपुर	23	12	11	24
टोंक	5	NA	NA	NA
राजसमन्द	8	8	0	23
चितौडगढ़	76	24	52	24
झालावाड़	23	17	6	36
झुन्झुनूं	20	20	0	55
अलवर	11	11	0	26
कोटा	2	1	1	2
योग	305	155	150	352

सरकार द्वारा जिला, पंचायत समिति व पंचायत स्तर के सभी अधिकारियें का प्रत्येक माह विद्यालय में जाकर मध्याह्म भोजन का अवलोकन करना व उसे चखकर आने के निर्देश दिये गये है। प्रत्येक अधिकारी के लिए प्रति माह विद्यालयों की संख्या भी तय कर रखी है।

- अध्ययन में शामिल 305 विद्यालयों में से 155 विद्यालयों में **विगत दो माह में विद्यालय अवलोकन हुआ है।** वहीं 150 विद्यालयों में **विगत दो माह में कोई विद्यालय अवलोकन नहीं हुआ।**
- चितोडगढ़ जिले में अध्ययन में शामिल 76 विद्यालयों में से 24 विद्यालयों में **विगत दो माह में विद्यालय अवलोकन हुआ है।** वहीं 52 विद्यालयों में **विगत दो माह में कोई विद्यालय अवलोकन नहीं हुआ।**
- इसी प्रकार बाडमेर जिले में 65 विद्यालयों में से मात्र 7 विद्यालयों में **विगत दो माह में विद्यालय अवलोकन हुआ है।** वहीं 58 विद्यालयों में **विगत दो माह में कोई विद्यालय अवलोकन नहीं हुआ।**

अध्ययन में शामिल स्कूलों में बच्चों के बीच हो रहे जातिगत भेदभाव की स्थिति

जिले का नाम	पंचायत समिति	गांव का नाम जहां सरकारी विद्यालय है	भेदभाव के प्रकार
बीकानेर	नोखा	सारूण्डा	• बरतन बच्चे घर से लाते है। • दलित व अन्य बच्चे अलग–अलग लाईन में बैठकर खाते है।
बीकानेर	नोखा	अणखीसर	• बरतन बच्चे घर से लाते है। • दलित व अन्य बच्चे अलग–अलग लाईन में बैठकर खाते है।
बाढमेर	शिव	मेघे का गांव	पहले अनु. जन. जाति की महिला कुक थी जिसे गांव के विरोध के कारण हटा दिया।
बाढमेर	धोरीमन्ना	धोरीमन्ना	विश्नोई जाति के बच्चे स्कूल में भोजन नहीं करते है।
सिरोही	रेवदर	दत्ताणी	राजपूत बच्चे घर से भोजन जाने है।
राजसमन्द	राजसमन्द	मेघीरया कला	दलित बच्चे खाना नहीं परोसते है उच्च जाति के बच्चे खाना परोसते है।
राजसमन्द	राजसमन्द	बागपुरा	दलित बच्चे खाना नहीं परोसते है उच्च जाति के बच्चे खाना परोसते है।
राजसमन्द	राजसमन्द	तरसिंगडा	दलित बच्चे खाना नहीं परोसते है उच्च जाति के बच्चे खाना परोसते है।
बाढमेर	चौहटन	बावडी कला,	भोजन परोसने वाली महिला दलित जाति की होने के कारण भील जाति के बच्चे व उच्च जाति के बच्चे भोजन नहीं करतें हैं।
बाढमेर	चौहटन	देदूसर	दलित बच्चों व उच्च जाति के बच्चों को खाना परोसने का काम उच्च जाति के बच्चें करतें हैं।
बाढमेर	चौहटन	खारी	• दलित महिला पोषाहार बनायेगी तो उच्च जाति के बच्चे पोषहार को हाथ भी नहीं लगाते है। • उसमें अध्यापकों का रोल भी शामिल है। • बच्चे अलग अलग स्थानों पर बैठकर पौषहार खाते है दलित बच्चे अलग व उच्च वर्ग के बच्चे अलग से बैठते हैं।
बाढमेर	चौहटन	आंटिया	• दलित बच्चों व उच्च जाति के बच्चों को खाना एक साथ मिलकर नहीं खिलाया जाता है अलग अलग उच्च जाति के बच्चे किचंन शैड में बैठकर खाते है जबकि दलित बच्चे बहार धूप में बैठकर खाते है। • दलित बच्चों व उच्च जाति के बच्चों के खाने के बरतन अलग अलग रखे हुए है।
बाढमेर	चौहटन	नेतराड	• दलित बच्चों को परोसने का कार्य नहीं दिया जाता हे। उच्च जाति के बच्चे परोसने का काम करती हैं। • दलित बच्चों व सवर्ण बच्चे के बरतन रसोई में अलग अलग रखे जाते है। • दलित व उच्च जाति के बच्चों के बरतन सभी विद्यालयों में व्यवस्था है जो इस प्रकार से है

			(अ) दलित बच्चों के लिये छोटी कटोरिया हैं। (ब) उच्च जाति के बच्चों के लिये अच्छी थालिया है। • दलित व उच्च जाति के बच्चे अलग अलग स्थान पर बरतन साफ करते है।
बाढमेर	चौहटन	सुहाणी	• दलित बच्चों व उच्च जाति के बच्चो को खाना परोसने का काम पोषहार पकाने वाली महिला, पैराटीचर, उच्च जाति के बच्चे के द्वारा ही परोसा जाता है। • दलित बच्चे विद्यालय के बरतन में खाना खाते है उच्च जाति के बच्चे घर से बरतन लाते है। • पीने के बरतन अलग अलग रखें गये है।
चितौडगढ़	छोटी सादडी	धाकडों का संतोष पुरिया	बच्चों के साथ उंच्च नीच का भेदभाव किया जाता है।

अध्ययन में शामिल स्कूलों में बच्चों को उपलब्ध करवाये जा रहे भोजन की गुणवत्ता व उपलब्धता

जिले का नाम	पंचायत समिति	गांव का नाम	गुणवत्ता व उपलब्धता का प्रकार
उदयपुर	कोटडा	कातरा फला	भोजन की मात्रा कम मिलती है।
	कोटडा	नयावास	भोजन की मात्रा कम मिलती है।
	कोटडा	उफली मामेर	भोजन की मात्रा कम मिलती है।
	कोटडा	देहरी	भोजन की मात्रा कम मिलती है। अनाज का भंडारण सही नहीं है। खराब अनाज बच्चों को खिलाया जा रहा है।
	कोटडा	निचला घला	बच्चों को भोजन पलास के पत्तों में कराया जाता है।
	कोटडा	कउचा	मीनू के अनुसार खाना नहीं दिया जाता है।
	गिर्वा	रामपुरा	भोजन की गंणवत्ता ठीक नहीं थी। रोटी काफी सुखी हुई थी। दाल काफी पतली थी।
	बड़गांव	रामनगर	भोजन की गुंणवत्ता ठीक नहीं थी। रोटी काफी सुखी हुई थी। दाल काफी पतली थी। माता–पिता ने बच्चों को भोजन के लिये मना कर रखा है अध्यापक के अनुसार।
बाड़मेर	धोरीमन्ना	मांगता	भोजन अनियमित रूप से कभी कभी मिलता है व कम मात्रा में मिलता है।
	शिव	लिकड़ी	वर्तमान में पोषाहार खत्म है।
	शिव	सुवाला	भोजन कम मात्रा में दिया जाता है।
	शिव	रूधानाडा	भोजन कम मात्रा में दिया जाता है।
	शिव	राजड़ों की बस्ती	भोजन कम मात्रा में दिया जाता है।
	सिणधरी	सडा	गैहूं अच्छी क्वालीटी के नहीं है।
	बाड़मेर	तामलियार	पिछले 20 दिन से पोषाहार नहीं है।
	बाड़मेर	सेतराऊ	पिछले काफी दिनों से पोषाहार नहीं है।

	बाड़मेर	तमलीयार	पिछले 20 दिन से पोषाहार नहीं है।
	बाड़मेर	उनाली नाड़ी	पिछले 20 दिन से पोषाहार नहीं है।
	बाड़मेर	मानपुरा	पिछले 20 दिन से पोषाहार नहीं है।
	बाड़मेर	खाकरया किता	पिछले 20 दिन से पोषाहार नहीं है।
	बाड़मेर	सेतराऊ	पिछले 15– 20 दिन से पोषाहार नहीं है।
	बाड़मेर	हाजी खॉं तला	पिछले 15– 20 दिन से पोषाहार नहीं है।
बीकानेर	नोखा	मैकसर	खाना मीनू के अनुसार नहीं पकता। बच्चे पकाते है।
बीकानेर	नोखा	अणखीसर	फल नहीं बटता है।
बीकानेर	नोखा	सारूण्डा	फल नहीं बटता है।
बीकानेर	नोखा	सोमलसर	खाना मीनू के अनुसार नहीं पकता। भोजन की गुणवत्ता अच्छी नहीं थी।
जोधपुर	फलोदी	चारतु	अनाज का भंडारण सही नहीं है। चावल की गुणवत्ता ठीक नहीं।
जोधपुर	फलोदी	नारायणपुरा	चावल की गुणवत्ता ठीक नहीं।
जोधपुर	फलोदी	गोदारो की ढाणी नारायणपुरा	चावल की गुणवत्ता ठीक नहीं।
जोधपुर	बाप	ढाढखाला करणी नाडी	चावल की गुणवत्ता ठीक नहीं।
जोधपुर	बाप	ढाढखाला	चावल की गुणवत्ता ठीक नहीं।
जोधपुर	बाप	रवेसागर	चावल की गुणवत्ता ठीक
जोधपुर	बाप	मुसलमों की ढाणी खेगासर,	गैहूं व चावल की गुणवत्ता ठीक नहीं।
चितौडगढ़	छोटी सादडी	सन्तोषपुरिया	खाना पकाने के लिये कुक व सहायिका नहीं है। अध्यापक व बच्चे मिल कर पकाते है।
चितौडगढ़	छोटी सादडी	कारूण्डा (1)	1 नवम्बर से पोषाहार पकाना बन्द है।
चितौडगढ़	छोटी सादडी	कारूण्डा (2)	1 नवम्बर से पोषाहार पकाना बन्द है।
चितौडगढ़	छोटी सादडी	बरोल जागीर	अनाज की अच्छी क्वालिटी का नहीं था।
चितौडगढ़	छोटी सादडी	हरमराकी रेल (1)	गेहू कुछ खराब है। भोजन सही पकाया नहीं जाता है। केवल चावल ही दिया जाता है। विद्यालय दिपावली से पहले चालु था अभी तक दिपावली का अवकाश पूर्ण नहीं हुआ है।
चितौडगढ़	छोटी सादडी	हरमराकी रेल (2)	अवलोकन के दौरान विद्यालय बन्द था। पीने का पानी की समस्या है। मीड डे मील में केवल चावल ही देते हैं वो भी औसत से कम दिया जाता है।
चितौडगढ़	छोटी सादडी	इटोका तालाब	भोजन एक ही प्रकार का दिया जाता है।
चितौडगढ़	छोटी सादडी	इटोका तालाब प्रथम	खाना सहायिका अपने घर पर बनाकर लाती है। अच्छा नहीं बनाया जाता है।
चितौडगढ़	छोटी सादडी	जाजपूरा	बच्चों के खाने के बरतन नहीं है।
चितौडगढ़	बडी सादड़ी	कल्याणपुरा	बच्चों के खाने के बरतन नहीं है। विद्यालय में खाना पकाने के बरतन नहीं है।
चितौडगढ़	बडी सादड़ी	श्यामपुरा	विद्यालय में खाना खिलाने के बरतन नहीं है।
झालावाड़	डग	खेजडिया	जो कुक खाना अपने घर से बनाकर लाती है। भोजन स्वादिष्ट नहीं पकता है व गंणवत्ता सही नहीं है।

झालावाड़	डग	बामन देवरिया	फल वितरण नहीं होता है।
झालावाड़	डग	छामन	बच्चों को पका भोजन नहीं दिया जा रहा है इसके स्थान पर कच्चा अनाज वितरित किया
झालावाड़	डग	देवगढ	शिक्षकों के लिये अलग से रोटी बनाई गई।
अलवर	तिजारा	बेरेला	भोजन समय पर नहीं उपलब्ध होता है।
अलवर	तिजारा	आधांका	भोजन समय पर नहीं उपलब्ध होता है।
अलवर	किशनगढ़	लगड़बास	में। भोजन कम मात्रा में उपलब्ध होता है।
अलवर	किशनगढ़	भटकोल	भोजन कम मात्रा में उपलब्ध होता है।
अलवर	किशनगढ़	चौड़ावता	भोजन समय पर नहीं उपलब्ध होता है। भोजन कम मात्रा में उपलब्ध होता है।
अलवर	किशनगढ़	मिर्जापुर	भोजन समय पर नहीं उपलब्ध होता है। भोजन कम मात्रा में उपलब्ध होता है।
अलवर	किशनगढ़	सरपुर	भोजन समय पर नहीं उपलब्ध होता है।